ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

हिंदी निबंध साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर

डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे

हिंदी विभाग, खोलेश्वर महाविद्यालय,

आनंद नगर,अंबाजोगाई

यदि पद्य कवियों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की। आ. रामचंद्र शुक्ल के इसी कथन के अनुसार हिंदी साहित्य में निबंध विधा की श्रेष्ठता प्रतिपादित होती है। 'निबंध' शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसका अर्थ विचारों को बांधना तथा विचारों की श्रृंखला संग्रहित करना है। सामान्य रूप से निबंध को परिभाषित करते हुए हम कह सकते हैं कि निबंध उस गद्य रचना को कहा जाता है, जिसमें एक सीमित आकर के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन,स्वच्छंदता, स्वास्थ्य, सजीवता तथा आवश्यक संगति और संबंधता के साथ किया गया हो। अनेक स्थानो पर निबंध के स्थान पर 'प्रबंध' शब्द का प्रयोग किया जाता है। तो कही पर 'आश्रय,'लेख' शब्द भी इस्तेमाल जाते हैं। निबंध और प्रबंध में अंतर स्पष्ट करते हुए हम कह सकते हैं कि निबंध छोटा, मुक्त और स्फुट रचना का होता है। तुलना में प्रबंध एक सम्यक परिनिष्ठित और ग्रंथाकर रचना होती है। लेखक की व्यक्तिगत अस्मिता निबंध में विशेष होती है। जोकि प्रबंध में नहीं होती। लेख शब्द का विचार करें, तो लेख कोई गद्य विधा नहीं है।लेख का अर्थ -लिखा हुआ। अंग्रेजीभाषा के शब्द आर्टिकल के पर्यायवाची शब्द के रूप में इसका प्रयोग होता है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

निबंध विधा का उद्भव आधुनिक काल से हुआ है। सन 1857 से ईस्ट इंडिया कंपनी को हटाकर अंग्रेजों ने सीधे रूप से अपनी सत्ता स्थापित की। अपने शासनकाल में उन्होंने भारतीय विरासत को मिटाना चाहा। भारत की संस्कृति, सभ्यता,गरिमामय इतिहास यहां तक की भाषा आदि को नष्ट करने का साहस किया। जब-जब भी इसके भारतियों ने विरोध किया तब उन्होंने भारतियों पर अमानवीय अत्याचार किये। अनुज्ञप्ति अधिनियम, जलियांवाला हत्याकांड, बंगाल विभाजन की राजनीति, रोलैक्ट एक्ट, भगतसिंह तथा उनके क्रांतिकारी साथीदारों को फांसी जैसी घटनाओं को रेखांकित किया जा सकता है। करोड़ों लोगों की गिरफ्तारी कर बेकसूरों को मारपीट की गई। कई जगह हम पर बेछुट गोलियां बरसाई गई, लेकिन आजादी को केंद्र में रखकर वीर जवानों ने विभिन्न माध्यमों से स्वाधीनता आंदोलन में अपनी आहुति दी। देश के लगभग सभी कोनों से विविध आंदोलन का सहारा लेकर देशवासियों ने अपना बलिदान दिया। अन्य भाषाओं के साथ

हिंदी साहित्यकारों ने आंदोलन में अपनी कलम प्रखरता से चलाई। स्वाधीनता आंदोलन की इसी पृष्ठभूमी में हिंदी निबंध का योगदान यहां प्रस्तुत है। अध्ययन सुलभता हेतू भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग इन चार कालों में निबंधों को वर्गीकृत किया जाता है। आधुनिक युगीन हिन्दी पत्रकारिता में इन्ही निबंधो से जनजागृती हुई है। ‘कवि वचन सुधा’, ‘हरिश्चंद्र मैगजीन’,’ मित्र विलास’, ‘हिंदी प्रदीप’,’मोहन चंद्रिका’, ‘ब्राह्मण’ आदि पत्र पत्रिकाओं का स्वाधीनता आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन पत्र- पत्रिकाओं में विचारात्मक, व्याख्यात्मक, भावनात्मक, निबंध प्रकाशित हुए। इन निबंधों का तत्कालीन सामान्य जनता पर प्रभाव देखा गया। इसका मुख्य कारण था कि निबंधों को इस पद्धति से लिखा जाने लगा जिससे पाठकों की चेतना जागृत हो। वह सोचने पर मजबूर हो। भावोत्तेजक निबंधों में किसी सामाजिक विषय पर मर्मस्पर्शी शैली में पाठकों को उत्तेजित करने का लक्ष्य रखा जाता है। ‘देश भाइयों से प्रार्थना’ नामक निबंध इसी कोटी का है इसका आरंभ इस प्रकार हुआ है। जैसे- ”भारत भाइयों, यह समय मौन धारण का नहीं है। आजकल जब तक राजा के कान फोड़- फोड़ कर प्रजा का दु:ख न सुनाया जाए, तब तक राजा की नींद नहीं खुलती ... । “[1.]

भारतेंदु युग से शुरु हुई निबंध विधा में अग्रेसर रहे, स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र। उन्होंने राजनीतिक, धार्मिक,सामाजिक तथा साहित्यिक निबंध लिखें। देखा जाए तो भारतेन्दु जी के प्रारंभिक निबंध अंग्रेजी शाषन की प्रशंसा परक दिखाई देते रहे, जोकि मात्र आभास था। सच तो वे लोगो में जागृति करना चाहते थे किन्तु अभिव्यक्ति की पाबंदी होने से यह प्रक्रिया असान नही थी। अंग्रेजों की शासन प्रणाली की तारीफ करते उनके प्रारंभिक कूछ निबंध उपलब्ध है। लेकिन जल्द ही अंग्रेजों के प्रति उनका भ्रम टूटा और उन्होंने ‘भारत वर्षोन्नति कैसी हो सकती है’,’अंग्रेज स्रोत’,’कंकड स्रोत’ आदि निबंध लिखकर अंग्रेजों पर निशाना साधा है। उनके द्वारा रचित ‘भारत वर्षोन्नति कैसी हो सकती है’ निबंध में देश में व्याप्त कुरीतियो को त्याग कर प्रगतिशील राह पर चलने की सीख देते हैं। तत्कालीन समाज में अंधविश्वासों का बोलबाला अत्यधिक रहा। इसको मिटाने के लिए शिक्षा का महत्व प्रतिपादित कर एकता के साथ आगे बढ़ाने की सलाह देते हैं। प्रस्तुत निबंध में उन्होंने तुलनात्मक दृष्टि से अंग्रेजों का उदाहरण देकर अपने देशवासियों को समय का सदुपयोग कर जागृत तथा सतर्क रहने का उपदेस दिया है। उनके अन्य एक निबंध में लिखा है- अंग्रेज स्रोत। इस स्रोत में अंग्रेजों पर व्यंग प्रणाली से निशाना साधते हुए वह लिखते हैं –“हे अंग्रेज! हम तुमको प्रणाम करते हैं। तुम हाती शत्रु दल के। तुम कर्ता अहीन गाड़ी के। तुम विधाता नौकरियों के। अतः एव हे अंग्रेज हम तुमको प्रणाम करते हैं।“[2] इसके अतिरिक्त लेवी प्राण लेवी, कंकड स्तोत्र इन निबंधों में तत्कालीन समस्याओं का प्रतिबिंब स्पष्ट निर्देशित होता है।

भारतेंदु युग के अन्य प्रमुख निबंधकार रहे, बालकृष्ण भट्ट जी। उनके द्वारा लिखित राजनीतिक विषयों के निबंधों में उनके कटु आलोचना पद्धति के दर्शन होते हैं तथा सामाजिक निबंधों में उनकी खंडन-मंडन की विरोध मूलक पद्धति को देखा जाता है। “ देशभक्ति पूर्ण निबंधों में उनकी गंभीरता पूर्वक संवेगात्मक पद्धति तथा शास्त्रीय निबंधों में उनकी विवेचनात्मक पद्धति दृष्टिगोचर होती है। भाषा विषयक

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

निबंधों में उनके तर्क पूर्ण आलोचना आत्मक पद्धति के दर्शन होते हैं और साहित्यिक विधा संबंधी निबंधों में उनके मौलिक चिंतन मनन से परिपूर्ण विश्लेषणात्मक पद्धति को देखा जा सकता है।"[03] हिंदी प्रदीप पत्रिका के संपादक रह चुके बालकृष्ण भट्ट जी के निबंध का संकलन दो भागों में हुआ है। साहित्य सुमन और भट्ट निबंध माला इनके द्वारा लगभग हजार निबंधों का सर्जन हुआहै। उनके निबंधों में अंग्रेजों की साम्राज्यवादी एवं शोषण नीति पर प्रहार किए गए। उनके अनुसार धन-पुंजी से परिपूर्ण भारत देश की आज की दुरावस्था केवल अंग्रेजों के कारण ही हुई है। अपनी इसी मान्यता को पाठक के समक्ष रखते हुए वे कहते हैं कि "हम क्यों न कहे, हमारे बाप- दादा भली भांति रणजी पूंजी थे और हम इस अंग्रेजी राज्य में पेट भर अन्न भी नहीं पाते। यह बात हमारे शासन कर्ताओं के कान को प्यारी न लगती हो। तो क्या किया जाए; यह बात सत्य है, वही कही जाएगी की अवश्य यह सब राज्य प्रबंध का दोष है।"[04] भट्ट जी ने कृषकों का अश्रुपात निबंध में देश के किसानों की दैनिक स्थिति का वर्णन किया है। तो 'सरकारी दफ्तरों में नौकरी' शीर्षक निबंध में सरकारी दफ्तरों में चलने वाला भ्रष्टाचार- रिश्वतखोरी अनुचित पक्षपात आदि पर कटाक्ष किए हैं। आर्थिक नीतियों पर भी उन्होंने अंग्रेजों को आधे हाथों लेने का कार्य किया। उनके 'समाज सुधारक' निबंधों में बाल विवाह स्त्रियों और उनकी शिक्षा राजा और प्रजा अंग्रेजी शिक्षा और प्रकाश देश सेवा का महत्व आदि प्रमुख हैं। देश उद्धार की भावना से उत्प्रोत इन निबंधों में उन्होंने अंग्रेजों की राष्ट्रव्यापी शोषण नीति का जमकर विरोध किया है।

इसी श्रृंखला में पंडित प्रताप नारायण मिश्रजी ने 15 अगस्त 1883 में कानपुर से 'ब्राह्मण' शीर्षक से पत्रिका निकाली। मिश्रजी, भारतेंदु तथा बालकृष्ण भट्ट के समकालीन निबंधकार थे। उनके निबंधों की विशेषता यह है कि उनके निबंधों में हास्य और व्यंग्य की भरमार मिलती है। इसी व्यंग्य शैली में उन्होंने अंग्रेजों की पोल- खोल की है। स्वदेशी वस्तुओ से अत्यधिक लगाव होने के कारण मिश्रजी की कलम से स्वदेशी का प्रचार प्रचार हुआ। जैसे 'देशी कपड़ा' नामक उनका निबंध देश प्रेम के साथ-साथ समाज सेवा का भी प्रगटीकरण है।

बद्री नारायण 'प्रेमघन' ने 'भारतवर्ष की दरिद्रता', 'भारतवर्ष के लुटेरे' और 'उनकी दिन दशा, स्वदेशी वस्तु स्वीकार और विदेशी बहिष्कार भारतीय प्रजा में दो दल आदि निबंधों में अंग्रेजी शासन प्रणाली की कड़े शब्दों में आलोचना की। अंग्रेजी कर प्रणाली के परिणाम किसानो की विकट स्थितियों पर होता देख वे लिखते हैं कि "विदेशी व्यापारियों ने भी लूट का डंका ऐसा बजाया की इस देश के व्यापार का सत्यानाश किया की जीत अनोखी जीविका इससे चलती थी, उनके गृह हमें व्यापार की परिपाटी चली आ रही थी। अब वह घूमते चिल्लाते चार पैसे की मजदूरी ढूंढ रहे हैं। विलायती व्यापारियों ने जैसी कुछ दीन- दशा इस देश की की है और किसी प्रकार कभी हो ही नहीं सकती थी। वहीं दूसरी तरफ उनके निबंध देश की आर्थिक दशा सुधारने के उपाय भी अंकित करते हैं।

द्विवेदी युगीन निबंधकारों में सरस्वती पत्रिका के माध्यम से नित नए निबंधकारों के कलम से स्वाधीनता के लिए आवश्यक वातावरण, देश सेवा का महत्व, बलिदान की भावना को बढ़ाने के लिए निबंधों का सर्जन हुआ। भारतेंदु

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

काल में 'हिंदी प्रदीप' का बोलबाला रहा । उसमें सरस्वती पत्रिका का आगमन स्वाधीनता संग्राम को बलशाली बनाने में सिद्ध हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका को अधिक समृद्ध बनाने के लिए सतत प्रयत्न किया। उनके प्रोत्साहन से ही तत्कालीन नए निबंधकारों ने उत्पुरातता से अंग्रेज विरोधी भावनाओं को बिना डरे खुलकर लिखना प्रारंभ किया। 'कई कर्तव्य' नामक निबंध में द्विवेदी जी ने साहित्यकारों के दायित्व की महत्ता को प्रतिपादित किया। द्विवेदी जी ने अपने निबंधों के द्वारा न केवल हिंदी लेखकों को निबंध लिखने के विविध विषयों से परिचित कराया। उनका निबंध लिखने की विविध पद्धतियों से भी अवगत किया था। द्विवेदी जी के निबंधों की विशेषता रही, उनकी आलोचनात्मक पद्धति। जनता में मातृभाषा का महत्व प्रतिपादित करते हुए उन्होंने 'मातृभाषा और अंग्रेजी', 'मातृभाषा के द्वारा शिक्षा प्रणाली का महत्व' निबंध लिखें। देश में शिक्षा की महत्ता बतलाता 'भारत में शिक्षा की दशा' यह निबंध लिखा। युवकों में राष्ट्रभक्ति प्रेरित हो इसीलिए 'भारतीय सैनिकों की शूरवीरता', 'देशभक्ति की बातें' आदि निबंधों का सृजन किया। तत्कालीन कृषि व्यवसाय और उद्योग से संबंधित आम जनता के हित को मद्दे नजर रखते हुए कई निबंध लिखे। जैसे 'खेती की बुरी दशा', 'हिंदुस्तान का व्यापार', 'कृषि विद्या के अद्भुत आविष्कार', 'स्वदेशी वस्त्र के व्यापार में उन्नति' आदि। इस कल के अन्य सशक्त निबंधकार रहे- बालमुकुंद गुप्तजी। इनका समस्त निबंध साहित्य गुप्त ग्रंथावली भाग 1, शिव शंभू के चिट्ठे और चिट्ठे और खत, नामक ग्रंथो में समाविष्ट है। 'शिव शंभू के चिट्ठे', बालमुकुंद गुप्त का बहुत ही चर्चित निबंध संग्रह है जिसमें विदेशी शासन प्रणाली, अंग्रेजों के नीतियों के द्वारा होता भारत विरोधी, फूट की रणनीति आदि को दर्शाया गया है। 'वायसराय का कर्तव्य' नामक निबंध में तत्कालीन शासन पद्धति की तीखी आलोचना की गई है। 'बना लाल कर्जन' शीर्षक से लिखा निबंध व्यंग्य शैली के माध्यम से देश की दुरावस्था को लॉर्ड कर्जन को जिम्मेदार मानते हैं। लॉर्ड कर्जन का भारत में वायसराय के रूप में आगमन उनके द्वारा संपन्न सुधार, दिल्ली दरबार कोलकाता जुलूस, विक्टोरिया स्मारक का निर्माण और भारत के शासनकाल में उनके द्वारा उपयोग किए गए सुख, वैभव, विलास को व्यंग्यता के साथ प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत निबंध में वह लिखते हैं कि –''अपने माई लॉर्ड! जबसे भारत वर्ष में पधारे हैं, बुलबुलों का सुख नहीं देखा है। यह सचमुच कोई करने के योग्य काम भी किया है। खाली अपना ख्याल ही पूरा किया है या यहां की जनता के लिए भी कुछ कर्तव्य पालन किया। एक बार यह बातें बड़ी धीरता से मन में विचारीय। आपकी भारत में स्थिति की अवधि के पांच वर्ष पूर्ण हो गए। अब हिसाब लगाइए नुमाइशी कामों के सिवा काम की बात आप कौन सी कर चले हैं और भड़कबाजी के सिवा ड्यूटी और कर्तव्य की और आपका इस देश में आकर कब ध्यान रहा है।''[5] सरदार पूर्ण सिंह अध्यापक का निबंध 'सच्ची वीरता' में महात्मा बुद्ध, महाराजा रणजीत सिंह, गुरु नानक, शंकराचार्य आदि का उदाहरण देकर अंग्रेजों के खिलाफ मनो धैर्य बढ़ाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत निबंध में क्रांतिकारियों को वीरता का अर्थ बताते हुए सच्चे वीर उन्हें कहा जाता है, जो सामने खड़े विशाल पहाड़ अथवा बड़ी चुनौतियों का हिम्मत से मुकाबला करते हैं। राष्ट्र समर्पण की भावना को बढ़ावा देता हुआ, यह निबंध दिखाई देता है।

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

अंग्रेज शासन प्रणाली ने एक और जहां धार्मिक शोषण किया जा रहा था। उसी समय भारत में धार्मिक उथल-पुथल मची थी। रूढ़ियों और परंपराएं भी टूटती जा रही थी। दूसरी पनिश्चर्य ने रूप में मजबूत भी बनती जा रही थी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित निबंधों में भारत की तत्कालीन धार्मिक प्रवृत्तियां, संप्रदाय तथा धर्म संबंधी उनके स्पष्ट विचार दिखाई होते हैं। संक्षेप में कहां जाए तो स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी निबंधकारों ने अपनी प्रतिभा से अंग्रेजी शासन को यथास्थान विरोध किया। कही-कही कठोर आलोचना की इसमे भारतेंदु युगीन और द्विवेदी युगीन निबंधकारों का योगदान उल्लेखनीय तथा सर्वोपरि रहा है।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा ओंकार- हिंदी निबंध का विकास- अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर. पृष्ठ संख्या- 87
2. –“- पृष्ठ संख्या-104
3. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना- हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार- विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा. पृष्ठ संख्या-33
4. मु.ब.शहा- हिंदी निबंधों का शैलीगत अध्ययन- पुस्तक संस्थान, कानपुर. पृष्ठ संख्या-120
5. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- आधुनिक निबंध- ज्ञान भारती, दिल्ली. पृष्ठ संख्या-28

Cite This Article:

डॉ. गोरे म. श. (2024). *हिंदी निबंध साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वर*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 79–83) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646680